वसंत वैली पत्रिका

फरार उद्योगपति विजय माल्या

आज कल समाचारों में विजय माल्या का नाम हम सब ने सुना है। अब प्रश्न यह उठता है कि विजय माल्या है कौन?

विजय माल्या - नई पीढ़ी का एक आदर्श जो कुछ समय से एक भगोड़ा घोषित कर दिया गया है, कुछ समय पूर्व तक किंग ऑफ़ गुड टाइम्स कहलाने वाला अब एक ऐसा व्यक्ति बन गया है कि उसके साथ खड़े होने में भी भारत के लोग शर्म महसूस करने लगे हैं।

राज्य सभा का एक सदस्य जिसके साथ बात करने का आरोप वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली पर लग रहा है और उनकी सफाई का मजाक बनाया जा रहा है। पहले जो क्रिकेटर माल्या से मिलने और उसकी पार्टियों में जाने के लिए लालायित रहते थे अब लंदन में खेलते समय उसकी परछाई से भी काफी दूर रहते हैं। माल्या ने लंदन की नीलामी में टीपू सुल्तान की तलवार खरीद कर अपनी देश भक्ति का परिचय दिया था और लोग काफी प्रभावित हुए थे। अचानक लोगों के नज़रिये में यह परिवर्तन आया कैसे?

विजय माल्या यू.बी. समूह और किंगफिशर एयरलाइंस के अध्यक्ष व उद्योगपति हैं। २००८ में लगभग ₹72 अरब रुपये की संपत्ति के साथ यह विश्व के 962 वें सबसे धनी लोगों में शामिल हुए। परन्तु ज़्यादातर पैसा चोरी का पैसा है। इस व्यक्ति ने देश के बैंको से करीब 9000 करोड़ रुपये धोखाधड़ी से चुराए। विभिन्न बैंकों से लोन लेकर उन्होंने यह पैसा अपनी जायदाद बनाने में लगाया। जब भारतीय सरकार को यह पता चला, तब उन्होंने विजय माल्या को दोषी घोषित किया परन्तु उनके गिरफ्तारी के पहले वह ब्रिटैन फ़रार हो गया।

१९८२ में अपने पिता विट्ठल माल्या की मृत्यु के बाद यूनाइटेड ब्रेवरीज का मालिक बना। धीरे धीरे व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए माल्या ने किंग फिशर एयरलाइन्स, देश की पहली फार्मूला १ टीम, आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के टीम के मालिक के रूप में नाम कमाया। इनके नए साल के कैलेंडर देश के मॉडल्स के लॉन्चिंग पैड के रूप में जाने जाते रहे हैं।विजय माल्या २०१० में राज्य सभा का सदस्य बना।

विजय माल्या ने आगे बढ़ने के लिए ढेर सारे बैंक लोन लिए और उनको गैर कानूनी और गलत तरीके से अपनी निजी विलासिता के लिए उपयोग किया , किंग फिशर एयरलाइन्स के कर्मचारियों को लगभग २ साल का वेतन न देने के बाद से लोगों को कुछ दाल में काला लगने लगा। धीरे-धीरे एयरलाइन्स का व्यापार बंद हो गया।

१७ बैंको से लगभग ९००० करोड़ के लोन का धोखा करने के बाद अचानक २ मार्च २०१६ को माल्या फरार हो कर ब्रिटैन चला गया। भारतीय जाँच एजेंसियो और कोर्ट के गैर जमानाती वारंट के बावजूद माल्या ने भारत आने से इंकार कर दिया है। विजय माल्या अब ब्रिटैन में रह रहा है। भारतीय सरकार ने ब्रिटैन को कई पत्र भेजें है कि यह विजय माल्या को भारत भेजें कर दें परन्तु ब्रिटैन यह करने को तैयार नहीं है। ब्रिटैन आप्रवासन कानून कहता है कि विजय माल्या ने ब्रिटैन में ऐसा अपराध नहीं किया है एवं ऐसा कोई जायज़ कारण नहीं है जिसके अनुसार उन्हें ब्रिटैन से बाहर निकाला जा सके।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या होगा? यह प्रश्न भारतीय जनता तथा सरकार के मन में भी है। इस समय लंदन के कोर्ट में माल्या के प्रत्यर्पण की सुनवाई जारी है। अब तो बात यहाँ तक आ पहुँची है कि लंदन के कोर्ट ने माल्या की याचिका पर भारत से जेल की तस्वीरे मांगी हैं जिससे ऐसा आभास होता है कि लंदन कोर्ट ने माल्या को दोषी मान लिया है और स्थिति का आंकलन करने के पश्चात शायद उसे भारत भेज दिया जाये।

अदिति सिंह (१२)

स्कूल वाच

ऑनलाइन इंडिया क्विज, कक्षा 4

1 - वेद कालरा , वेदांत बिनानी
2 - ज़ोया साहनी
3- आमना झिंगन, अरहान पासी

'स्पीड मैथ'7 , कक्षा 6

विजेता- कायरा धर, मीहिका बागला

फ्लिपबुक कम्पटीशन ऑन स्टेट्स ऑफ़ इंडिया

1- अबीर दत्ता, अवीर सिंह
2- ऐलिना सरणा, परी दरमोरा,गायत्रि रमानी, नीना नाम्बिआर, वेदिका शर्मा, रेयांश पोद्दार, इशांत
3- अरिका अग्रवाल, रुहिन म खान, काव्या कपूर

हिंदी भाषण प्रतियोगिता, कक्षा 10

1- जय कपूर
2- श्रीजीत कोले, प्रकृति महाजन
3- नीलाक्षी तिवारी, आर्या वोहरा

संस्कृत कथा लेखन, कक्षा 8

1- कनिष्क शर्मा, मेहक आनंद, वेदांत सिंह, शैव्या गुप्ता
2- आनन्दिनी तयाल, वीर अनमोल सिंह, सार्थक खोसला
3- शायला उपाध्याय

स्पीड मैथ 7, कक्षा 12

विजेता: वीराज जिंदल

कक्षा 8,9 व 10 में आयोजित की गई कविता लेखन प्रतियोगिताओं की प्रथम पुरस्कृत कविताएँ।

मैं कौन हूँ?

सदियों से एक प्रश्न चलता आ रहा है,
सबको सवाल पता है, पर जवाब कोई नहीं जानता
अगर आपको पूछा जाये, 'आप कौन हो?'
क्या इसका जवाब आपका नाम हो सकता है?
किंतु नाम बदलने पर क्या आपका चरित्र बदलता है?
नाम बदलने पर आपके स्वभाव में भी कोई परिवर्तन तो दिखता नहीं है।
यदि नाम बदलने पर कुछ और बदलता नहीं है,
तो प्रश्न का जवाब आपका 'नाम' कैसे हो सकता है ?
अगर यह प्रश्न आपसे फिर पूछा जाये- आप कौन हो?-
तब आपके पास कोई जवाब कैसे हो सकता है?
आईने में देखते हुए मेरे मन में भी यह प्रश्न आया- मैं कौन हूँ?-
प्रश्न ध्यान आया, परंतु औरों की तरह जवाब तो मिला नहीं।
आईने में जिस लड़की का प्रतिबिंब है,
वह दूसरों से तो अलग है,
पर कैसे अलग है?
आईने में दिखती है जो सूरत,
क्या वही मेरी पहचान है?
और लोगों के पास भी मेरी जाति है, मेरा धर्म है,
मैं एक अकेली लड़की भी तो नहीं हूँ।
दुनिया में और लोग हैं जो मेरे जैसे हैं, जिनके पास मेरा नाम है,
पूरे संसार में केवल एक बच्ची का नाम 'प्रकृति' तो हो नहीं सकता है।
हम सब अलग हैं, पर कैसे अलग हैं?
हे आईने, तुम दिखाते हो कि मै बाहर से कैसी दिखती हूँ,
लोग कहते हैं मैं अच्छी दिख रहीं हूँ,
परंतु मुझे तो बस कमियाँ दिखती हैं।
मुझमें और आत्मविश्वास क्यों नहीं हो सकता, मैं और समझदार क्यों नहीं हो सकती?
आईने तुम ज़रूरी बातें तो दिखाते ही नहीं हो।
लोग औरों से दोस्ती करते हैं उनके स्वभाव को देखकर,
कौन सा आईना इंसानों का स्वभाव दिखता है?
लोग कहते हैं- 'काश मै उसकी तरह होता!'-
अरे, पहले खुद को तो पहचान ले,
कौन जाने, जो तुम बनना चाहते हो, शायद वो तुम पहले से ही हो?
हे आईने, तुम लोगों को खुद को पहचानने में मदद क्यों नहीं करते हो?
आईने, कहा जाता है कि तुम हमें वैसे ही दिखाते हो जैसे हम हैं,
पर मैंने तो तुम्हें कभी मेरे स्वभाव को दिखाते हुए नहीं देखा है।
तुम कैसे कह सकते हो कि तुम सत्य बोलते हो, आईने,
अगर तुम सबसे अहम बातें छिपा कर रखते हो?
हे आईने, मैं तो तुम्हें केवल एक प्रश्न पूछने आई थी- मै कौन हूँ?-
इतनी देर से तुम्हें देखती रही, पर जवाब अब भी अनजान है।

प्रकृति महाजन (१०)

आओ करे एक नया आरंभ

आओ इस नए साल में
करते है एक नया आरंभ
सोचते है ख़ुशियों के बारे में
और भूल जाते है सारे ग़म
करे जो हमें अच्छा लगे
और सुने मन की बात
दूसरों की बुराइयों को भूलें
और अच्छाइयों को दे दाद
खेलो अपने मनपसंद खेल
और साथ में करो पढ़ाई
दूसरों से दोस्ती ज़्यादा करो
और कम करो लड़ाई
भूल जाओ पुरानी दुश्मनी
और दुश्मनों को दोस्त बनाओ
जहाँ भी जाओ वहाँ
आपने साथ ख़ुशियाँ ले जाओ
तो चलो नए साल में
अपनी कमियों को ताक़त बनाएँ
चलो साथ में मिलकर
जीवन को ख़ुशी से बिताएँ

सार्थक खोसला (८)

'यह उन दिनों की बात है...'

कश्मीर की वादियों में,
जन्म हुआ था मेरा।
आकाश के टिम-टिमाते तारे,
और फूलों की महक सा सुनहरा।
हँसते,खिलखिलाते, क़दम बढ़ाए मैंने,
घूँघट जैसी हरियाली में हाथ फैलाए मैंने।
यह उन दिनों की बात है
जब सच्चाई और मासूमियत 'इंसानियत' कहलाती थी,
जहाँ अम्मी की गोद,मुझे सुरक्षित महसूस कराती थी।
गिरती-फिरती नदियों से टकराती,
पड़ोसियों के बग़ीचे से सेब चुराती।
सहेलियों के साथ उड़ती चिड़ियों के जैसे पानी फैलाना,
अब्बू के साथ बकरियों को दूर तक चराना।
स्वतंत्रता के साथ नाचती थी मैं,
कोयलों के साथ कूजती थी मैं।
यह उन दिनों की बात है
जब अपनों का साथ सैनिकों के हौसले के बराबरा,
जहाँ वीरता और ईमानदारी हमारा तलवार कहलाता था।

कहाँ गया वह समय?
जब हर कोई आपा और भाई जान कहलाते थे।
जहाँ एक दूसरे के बीच प्रेम,हम सब बाँटते थे।
त्योहारों में जब मिठाइयों की बहार आती थी,

बाहर जाने से कोई भी स्त्री नहीं घबराती थी।
काश! लौट सकते वो दिन,
जब आकाश में सिरोही नीला रंग लहराता था,
और हर किसी का मन आज़ादी और गर्व से फैल जाता था।

अर्शिया गौड़ (९)

लेखक श्री हरिंदर सिक्का से मुलाकात

चार सितम्बर को कक्षा ११ और १२ के छात्रों को प्रसिद्ध लेखक, श्री हरिंदर सिक्का के साथ बातचीत करने का मौका मिला। श्री हरिंदर सिक्का की किताब "कॉलिंग सहमत" पर जानी-मानी फिल्म "राज़ी" बनायीं गयी थी। सिक्का जी ने इस किताब को लिखने के पीछे की अपनी प्रेरणा बताई। उन्होंने बताया कि कारगिल युद्ध के समय उन्हें एक सैनिक मिला, जिसकी माँ सहमत थी। सहमत एक खुफिया एजेंट थी जिन्होंने अपनी जान को खतरे में डालकर भारत के लिए गुप्त जानकारी इकट्ठा की थी। सिक्का जी के बातों ने छात्रों को बहुत प्रेरित भी किया। उन्होंने भारतीय नौसेना में अपने जीवन के बारे में बताया और छात्रों को स्पष्ट किया कि असल में देशप्रेमी होने का अर्थ क्या है।

हरिंदर सिक्का जी ने देश के कुछ ज्वलंत मुद्दों पर भी अपने विचार व्यक्त किये जैसे कश्मीरी समस्या पर और कैसे हमारे फौजियों को अपनी सेवा के लिए आज कल न तो उचित वेतन मिलता है न ही उचित आदर। उन्होंने कहा कि सहमत की मौत के बाद भी, वह उन्हें प्रेरणा देती है और वह चाहते है कि देश में सहमत जैसे वीर लोगो को मान्यता मिले।

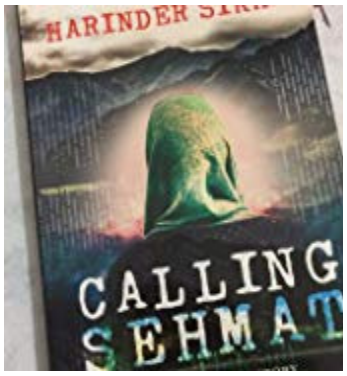

छात्रों ने सिक्का जी से 'सहमत' और भारतीय सेना के बारे में प्रश्न भी पूछे और सिक्का जी ने विद्यार्थियों से बेझिझक बातचीत की। उनके विचार सुनकर और उनसे बातचीत करने के बाद सभी छात्र प्रेरित हुए और उन्हें भारतीय सेना और राष्ट्रवाद जैसे तमाम मुद्दों का एक नया पहलू देखने को मिला।

अद्वय गुलाटी (११)

हिंदी पखवाड़ा

प्रति वर्ष 1 से 15 सितम्बर 'हिंदी पखवाड़ा' के रूप में मनाया जाता है। १४ सितम्बर,१९४९ को हिंदी भारत की राज-भाषा घोषित की गयी थी। हिंदी भाषा को प्रोत्साहन व बढ़ावा देने के लिए इस उत्सव को मनाया जाता है। यह उत्सव विद्यालयों में,विश्वविद्यालयों में,कार्यालयों व अन्य संस्थाओं में कविता,कहानी,लेखों व निबंधों के लेखन व वाचन और अन्य अनेक साहित्यिक गतिविधियों व प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा मनाया जाता है। इस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति विद्यार्थियों व अध्यापकों को हिंदी से सम्बंधित कार्यों में उनकी सफलता के लिए दिल्ली के विज्ञान भवन में पुरस्कार प्रदान करते हैं।

दिल्ली,गुरूग्राम व नॉएडा में, इस वर्ष, हिंदी पखवाड़ा का उत्सव कई ख़ास समारोहों द्वारा मनाया जा रहा है। ख़ास समारोह जैसे कि 'हिंदी साहित्य के इतिहास से रोमांचक कथाओं व कविताओं की रचना', नए हिंदी लेखकों की आने वाली पुस्तकों का विमोचन, 'भारतीय संगीतों का मिश्रण' और 'रंगीन जहाँ' नाम की रचनात्मक लेखन की प्रतियोगिता आम छात्रों के लिए आयोजित की जाएगी। हमारे विद्यालय में भी 'हिंदी दिवस' पर भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

अर्शिया गौड़ (९)

यदि मैं शिक्षक होता

गुरु द्रोण पांडवों व कौरवों के गुरु थे, यदि मुझे शिक्षक बनने का मौक़ा मिलता तो मुझे बहुत मज़ा आता। मुझे बच्चे अनुशासन में चाहिए होते, पर मैं उन्हें अनेक गतिविधियाँ तथा परियोजनाएँ करवाता। मैं विज्ञान व गणित पढाता। मैं उन्हें पंजाबी भी पढ़ा सकता था। मैं कुछ हास्य कविताएँ व 'यूट्यूब' से छोटी-छोटी फ़िल्मे दिखाता। मैं पढ़ाई के मामले में थोड़ा सा कठोर होता पर अगर बच्चो में कोई लड़ाई होती तो मैं सबसे पहले इंसाफ़ करने आता। मैं पक्षपात भी नहीं करता। परीक्षा के पहले मैं अच्छे 'नोट्स'देता । मैं अंत में यह भी कहना चाहता हूँ कि शिक्षकों का काम बहुत कठिन होता हैं क्योंकि उन्हें रोज़ किताबें चैक करनी होती हैं। कभी-कभी विद्यार्थी अध्यापिकाओं को बहुत तंग करते है जिससे उन्हें क्रोध आता है। इसलिए हमें उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए।

शुभकर्मण सिंह (७)

सूक्ष्म कथाएँ

रंग इधर, रंग उधर, सारी जगह रंग ही रंग।
बिना रंग के होते हम फीके, पर अब तो इधर-उधर रंग है दिखते। ऊपर नीला आसमान, नीचे हरियाली हरी, सारी जगह रंग ही रंग है।
इसलिए दुनिया है रंगों से भरी। **(रंग)**

सृष्टि, ६

रंग बनाते हमारी दुनिया बेहतर, नहीं होते तो बस देखने को मिलते काले और सफेद। रंग हमें जीने का हौसला देते है। रंग हर तरह के होते हैं, जैसे रंग घुल-मिलकर रहते है, हमें भी रहना चाहिए। **(रंग)**

दीक्षा, ६

दोस्त के नाम, सब कुछ कुर्बान,
हँसना, खेलना, पढ़ना, रोना, इसी के साथ।
यह है दोस्ती। **(दोस्ती)**

श्रेयसी जिंदल, ७

सौ खज़ाने जो सोने से भरे हो मिल सकते है पर एक सच्चा मित्र मिलना और एक सच्ची दोस्ती होना उससे ज़्यादा कीमती है। **(दोस्ती)**

रीआना छाबरा, ७

मुझे अक्सर याद आता है मैं अपने बचपन में क्या करता था। लेकिन अब सब बदल गया कुछ वैसा नहीं रहा। मेरे दोस्त बदल गए है, घर बदल गया है और बहुत और भी बदल गया है। इन सब की यादें अकसर मुझे आती है। मैं कभी इन यादों को नहीं भूलूंगा। **(यादें)**

जसराज सिंह, ८

यादों पर तो दुनिया कायम है,
कभी तुम होती थी, अब तुम याद हो।
उन यादो ने ही ताले को खोला है,
यादो पर तो दुनिया कायम है। **(यादें)**

दक्ष्यानी, ८

हवा में उड़ रही थी हज़ारों ख्वाहिशे, तितलियों के रूप में। मैने एक ख्वाहिश पकड़ी, और उड़ती चली गई। मैने देखा एक ख़्वाब। **(ख़्वाब)**

नोरा ईशा खोसला, ९

एक लक्ष्य, एक उपाय के बिना एक ख़्वाब है। **(ख़्वाब)**

उदयवीर जैन, ९

ऑख खुली की खुली रह गई, दिल जमा का जमा रह गया और जान थमी की थमी रह गई, जब वह रफ़्तार से मेरे सामने से पार्किंग लॉट में खड़ी हो गई। **(रफ़्तार)**

सिमरन सिंह, १०

और फिर, आपातकालीन में उसके दिल की रफ़्तार धीमी चलने लगी और उसकी साँसे रुक गयी। **(रफ़्तार)**

अनन्या मल्होत्रा, १०

सिंदूर- जो गाँव में एक बच्ची की माँग में भरकर उसे किताबों से दूर और घर के काम-काज से जोड़ देता है। एक लाल रंग जो एक छोटी लड़की को अपने घर से विदा कर देता है। **(सिंदूर)**

काव्या अग्रवाल, ११

लगाती थी वो सिंदूर अपनी माँग में गर्व से। एक हाथ उठाते ही दिल टूट गया। जन्मों के लिए क्या सात फेरे का मतलब फिर, क्या सिंदूर लगाना? प्यार कहाँ था जब उसने झटके से हाथ उठाया? **(सिंदूर)**

दारिणी चंडोक, ११

ताज यात्रा

पिछले सप्ताह हम आगरा गए थे। दिल्ली से आगरा पहुँचने में हमें 4 घंटे लगे। पर ये चार घंटे बस में गप्पे मारते हुए कब बीत गए पता ही नहीं चला। अपने होटल पहुँचने से पहले

हम एत्माद-उद-दौला गए थे। क्या आप जानते हैं कि इसे 'बेबी ताज' और 'ज्वेल बॉक्स' भी कहा जाता है। यहाँ से हम अपने होटल पहुँचे। होटल का स्वादिष्ट खाना देखकर भूख इतनी बढ़ गई कि हम सब बस खाने पर टूट पड़े। थोड़ी देर आराम करने के बाद हम आगरा किला पहुँचे। किला घूमने के बाद हम मेहताब बाग भी गए। ऐसा मानते हैं कि यहाँ एक काला ताजमहल बनाने की कोशिश की गई थी। मेहताब बाग से निकलकर हम सीधे होटल पहुँचे। रात का खाना खाकर हमने अपने मित्र शिवम का जन्मदिन केक काटकर मनाया और सब सोने चले गए। अगले दिन

सुबह सब बहुत उत्साहित थे क्योंकि हमें ताजमहल देखने जो जाने वाले थे। सुबह गर्म-गर्म दूध पीकर हम निकल पड़े। ताजमहल सचमुच बहुत सुंदर है। मैं यह सोचने लगी कि इसकी सुंदरता को बनाए रखने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं। इसके बाद हम होटल वापस आए और अपना इंटरव्यू का कार्य पूरा किया। दोपहर का भोजन करके हम दिल्ली के लिए निकले पड़े।

समायरा भल्ला ५ - अ

जादुई दुनिया

हम सब जादुई दुनिया के सपने देखते हैं। हम सोचते हैं - "काश! आज कुछ अनोखा हो जाए। शायद एक एलियन ही दिख जाए।" पर हम यह नहीं देखते कि हमारे चारों ओर जादू ही तो चल रहा है। पेड़ों पर सुंदर फूल खिल रहे हैं। छोटी सी चींटी दाना लेकर चल रही है। बेरंग सर्दी रंगबिरंगी वसंत कब बन जाती है पता ही नहीं चलता। तपती गर्मी से बचाने के लिए काले बादल ठंडा जल बरसा देते हैं। सुबह के समय ओस की बूँद के पास बना मकड़ी का वह जाला कितना अद्भुत दिखता है। एक छोटा सा बीज कब एक विशाल बरगद का पेड़ बन जाता है पता ही नहीं चलता। है न ये सब जादू! तो क्यों न उस बीज की तरह छोटे-छोटे काम करते चले जाएँ! क्या पता हमारा काम भी बरगद की तरह विशाल बन जाए।

काव्या मुखर्जी साहा ५ - स

हमारी धरती है कितनी सुंदर !!

'प्रकाश - छाया का रिश्ता'

तितली पकड़ने का जाल

यह हमारा तितली पकडने का जाल है। यह दो साल पुराना है।

छोटे छोटे सुराख़ होने के कारण इससे तितलियाँ आसानी से पकड़ी जाती हैं । इसका रंग नीला है। हमारे जालकी रस्सियाँ पतली लेकिन मज़बूत हैं। यह रस्सियाँ नायलोन के धागे से बनी हैं । हरेक शनिवार को हम तीनों बग़ीचे में तितलियाँ पकड़ने जाते हैं। हमें अपना जाल बहुत पसंद हैं।

रियाना, रनवीर, नयनतारा २ - अ

मेरा सपना

सपने में मैं खो गई कल रात,
उसी सपने में हुई किसी से मुलाकात।
मिली थी मैं अपने नाना-नानी से,
बहुत प्यार करते थे वे मुझसे।
उनसे बात करके आया इतना मज़ा,
सपने से बाहर आना लगे अब सज़ा।
काश! उनसे मिलने जा पाती वहाँ,
टिमटिमाते तारे रहते हैं जहाँ।
बहुत याद आते हैं मुझे मेरे नाना-नानी,
हर रात सुनाते थे मुझे नई कहानी।

ऋतिका ५ - अ

ताजमहल

ताजमहल है सबसे प्यारा,
भारत की आँखों का तारा।
ताजमहल है भारत की शान,
यह है बहुत विशाल और महान।
विश्वभर में है इसका नाम,
इसको बनाने वाला है शाहजहाँ।
शाहजहाँ के प्यार की निशानी,
किया जिसे याद सबने मुँह ज़ुबानी।
इसकी वास्तुकला है अद्भुत ,
इसे देख हो जाते सब मंत्रमुग्ध।

देवयानी मेहरा ५ - ब

बारिश आई

बारिश आई, बारिश आई
काले-काले बादल लाई।
मस्ती की बहार लाई,
बहुत सारा पानी लाई।
कीचड़ की परेशानी लाई,
बाढ़ की समस्या लाई,
अब क्या करे भाई?
साथ में खुशियाँ भी लाई,
माँ ने जलेबी बनाई,
रंग-बिरंगी छतरी लाई,
सबने मिलकर धूम मचाई।

स्तुति बचन ५ - अ

आज की दुनिया

समलैंगिक संबंध बनाना अब अपराध नहीं है, धारा 377 के कुछ प्रावधानों को सुप्रीम कोर्ट ने खत्म कर दिया है।

रुपया डॉलर के मुकाबले में 72.9 2 के नए रिकार्ड बना गया है।

पेट्रोल की बढ़ती कीमत आसमान छू रही हैं और भारत बंद उत्पात बढ़ा रहा है।

तूफान फ्लोरेंस की मजबूती बढ़ती जा रही है, और 1 मिलियन लोगों को यू.एस. ईस्ट कोस्ट से भागने के लिए कहा गया।

महासागर क्लीनअप योजना ने ग्रेट पैसिफ़िक गार्बेज पैच को साफ करने के लिए 600 मीटर लंबा कचरा संग्रह डिवाइस भेजा है।

'एप्पल' ने तीन नये फोन्स लांच किये है- आईफोन 'एक्स आर', 'एक्स एस' और 'एक्स एस मैक्स'।

अध्यापकों के साथ बीती हुई कुछ ख़ास यादें

ये २००७ की बात है, ग्यारह साल बाद भी मुझे यह घटना अभी तक याद है। 'जूनियर स्कूल' में हम स्प्लेश ताल में खेलने जाय करते थे। मैं तब तीन साल की थी, मैं गलती से स्प्लेश ताल में गिर गई और घबराने लगी। मेरी अध्यापिका ने बिना सोचे अंदर डुबकी लगा दी और मुझे निकाल लिया। मैं उस दिन को कभी नहीं भूलूँगी!

यह अगली बात २००८ की है, मैं जब नर्सरी में थी और चार साल की थी। स्कूल का आखिरी दिन था और हम सब घर जाने के लिए तैयार थे। जाने से पहले, मेरी अध्यापिका ने मुझसे कहा कि मैं उनकी आँखों में "द बेस्ट हूँ"। इस बात को मैं जब भी सोचती हूँ, मेरे चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान आ जाती है।

यह किस्से हमें सिखाते हैं कि कैसे अध्यापक हमेशा हमें हौसला देते है और हमारा भला ही चाहते है।

प्रार्थना बत्रा (९)

स्वीकार

धारा-377 भारत में अंग्रेजों ने 1862 में लागू किया था। मतलब, हमें 150 साल लग गए इसे ठीक करने के लिए। यह धारा अप्राकृतिक यौन संबंध को गैरकानूनी ठहराता था, और अगर कोई इसका उल्लंधन करता, तो उनको 10 साल की सजा से लेकर उम्रकैद की सजा हो सकती है। अप्राकृतिक सम्बन्ध कुछ भी हो सकते है, लेकिन यह धारा ज्यादातर समलैंगिकता पर ही केंद्रित थी।

समलैंगिकता को 6 सितम्बर, 2018 में क़ानूनी बना दिया गया। आर्टिकल 377 भारतीय संविधान के कई उसूलों के ख़िलाफ़ खड़ा था, जैसे कि आर्टिकल 24, जो क़ानून के सामने सभी नागरिकों को समानता देता है और आर्टिकल 25, जो किसी भी व्यक्ति की जाति, लिंग, धर्म आदि के आधार पर उससे भेद-भाव नहीं करता। इस आर्टिकल के गैरकानूनी साबित कर जाने से, भारत देश में समानता व हिम्मत का झंडा फिर लहर उठा है। इस ऐतिहासिक निर्णय ने हर भारतीय नागरिक का सीना गर्व से चौड़ा कर दिया है। लोगों की मानसिकता खुल रही, जनता इस बात को समझ रही है कि बदलाव नहीं रुकेगा, बल्कि इस बदलाव के ज़रिए लाखों लोगों की आवाज़ पूरी दुनिया तक पहुँच पाएगी। यह एकता, स्वीकृति व हमदर्दी की ओर भारत देश का विशाल क़दम है।

कत्यायनी झा, काव्यिनी गरोडिया (९)

नेटफ्लिक्स की दुनिया

नेटफ्लिक्स की दुनिया बहुत विशाल है; इसने टेलीविज़न शो और फिल्में देखने का तरीका ही बदल दिया है। पहले हम थिएटर जाकर जो फिल्म देखते थे, आज वही मनोरंजन १३० लाख लोगों के मोबाइल पर एक बटन के क्लिक पर उपलब्ध है । पर क्या यह, जो हमारे मनोरंजन का अभिप्रायपूर्ण माध्यम बन गया है, वह हमारे लिए मनोरंजन के अलावा मुसीबत भी ला सकता है?

अगर कोई भी किसी स्क्रीन का अत्यधिक उपयोग करे तो उनकी आँखों व दिमाग पर बुरा असर पड़ता है। मनोवैज्ञानिक नेटफ्लिक्स से अधिक आसक्ति होने को 'नेटफ्लिक्स इफ़ेक्ट' बुलाते हैं- बशर्ते आप भी ऐसी एक-आधी भटकती आत्मा को ज़रूर जानते होंगे। नेटफ्लिक्स से दिमाग पर असर के विषय पर बहुत किताबें भी लिखी गई हैं। क्या आप जानते हैं कि नेटफ्लिकस बहुत देरके लिए देखना गाड़ी चलते समय फ़ोन देखने से भी ज्यादा दिमागी-ज़ोर देता है?

अधिकतर समय जब आप नेटफ्लिक्स में लग्न होते हैं तो आपका कोई न कोई और काम छूट रहा होता है। औसतन, हर उपयोगी हर दिन करीब एक घंटा नेटफ्लिक्स देखता है। जब नेटफ्लिक्स पर आपकी कोई फ्लिम या शो ख़त्म होता है, तो वह आपको और शोज़ या फिल्मों का प्रस्ताव देता है। इन शोज़ के प्रस्ताव से आप समय और वास्तविकता का अंदाज़ा खो देते हैं । नेटफ्लिक्स ने पता लगाया है कि किसी भी शो के दो या तीन एपिसोड देखकर यह निश्चित है कि आप पूरा शो ख़तम होने तक चैन की साँस नहीं ले पाएँगे। नेटफ्लिक्स ने यह भी पता लगाया कि अगर आप पूरा पहला सीजन देख लें तो फिर ७०% निश्चित है कि आप पूरा शो ख़त्म करेंगे। नेटफ्लिक्स इतना शातिर है कि वह हर एपिसोड का ऐसे अंत करता है कि ख़त्म होने पर- बिना रुके अगले वाले पर जाने का मन करे। यह हमारे शरीर को सतर्क बना देती है और 'सी।र।ह।' नामक एक हार्मोन उत्सर्जित होता है। ऐसी सतर्कता हमारी नींद को भगा देती है।

एक और तर्क यह है कि नेटफ्लिक्स हमें क्षणिक व तुरंत संतुष्टि देताहै। जहाँ एक ओर टेलीविज़न पर आने वाले अपने मनपसंद के प्रोग्राम के लिए हमें रुकना पड़ता था, नेटफ्लिक्स पर जो चाहें,जहाँ चाहें, जितना चाहें देख सकते हैं । इससे आज की पीढ़ी में सब्र, श्रम, शील, विवेक जैसे गुण विलुप्त होते जा रहे हैं।

तो अगर आप भी नेटफ्लिक्स के गुलामी कर रहे हैं तो 'जागो ग्राहक जागो!' आप स्वामी बनो और नेटफ्लिक्स को दास ही रहने दो।

जय रल्हन (८)

शिक्षक दिवस

हमारे शिक्षकों ने हर पड़ाव पर हमारा अटूट साथ दिया है। उनकी छवि के घेरे में हमनें जीवन के कठिन से कठिन पड़ावों को पार किया है। हमारे पहले शिक्षक हमारे माता-पिता से जीवन भर कुछ सीखने को मिलता है, चाहे वह बचपन में सदा सच बोलने की सीख हो या बड़े होकर ज़िम्मेदारी लेने की। 'शिक्षक दिवस' हमारी जिंदगियों में हर उस शिक्षक का शुक्रिया अदा करने का दिन होता है, जिसने हमारे व्यक्तिव को आकार दिया हो। हमारे गुरु, हमारे अध्यापक , हमें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाते है।

स्वतंत्र भारत के द्वितीय राष्ट्रपति 'भारत रत्न' 'डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन' के जन्मदिवस के अवसर पर 5सितम्बर को भारत में 'शिक्षक-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 'डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का अपने जन्मदिवस को हर शिक्षक की प्रशंसा के दिवस के लिए सौंपना इस ही बात का सबूत है, कि हमारे शिक्षक हमारे लिए अमूल्य रत्न जैसे हैं।

स्कूल के सहायक दीदी-भैया से भी हमें कई महत्त्वपूर्ण बातें सीखने को मिलती हैं। उनकी कार्यस्थल में दृढ़ता, बच्चों के प्रति प्रेम व धीरज, हमेशा समय पर हमारी सहायता करने की तत्परता हमें उनका आदर करना सिखाती है, व उन जैसे परिश्रमी बनना सिखाती है। शिक्षक दिवस उन्ही छवियों का सम्मान करता है।

शिक्षा जीवन के हर अंग, हर इंसान से मिलती है। हम अपनी ज़िंदगी में कई लोगों से कई सीखों को धारण करते हैं। 'शिक्षक दिवस' उन लोगों के प्रति भी समर्पित है।

कात्यायनी झा (९)

फिनलैंड एक्सचेंज प्रोग्राम

फिनलैंड एक्सचेंज प्रोग्राम एक दस दिवसीय कार्यक्रम है। उन 10 दिनों के लिए, जो छात्र इस प्रोग्राम में भाग लेते हैं, 'हेलसिंकी के कुलोसारी स्कूल' के होस्ट के साथ रहते हैं।

चयन प्रक्रिया भारतीय संस्कृति पर एक निबंध लिखने के साथ शुरू हुई। यह प्रक्रिया जानने के बाद जबरदस्त उत्साह की चिल्लाहट के साथ खत्म हो गई कि कुछ हफ्तों के बाद हम फिनलैंड और एस्टोनिया की भूमि पर जाएँगे- जो सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्य से भरे हुए हैं।

हमने 26 अगस्त को अपने माता-पिता को अलविदा कहा। उस दिन 25 से ज्यादा उत्साहित छात्रों ने एक यात्रा शुरू की जिसने उन्हें दुनिया के उस कोने की खोज में मदद की, जो उनके लिए अज्ञात था और साथ ही साथ जीवन भर के लिए यादें भी बनाईं। इस यात्रा ने हमें अपनी सीमाओं को फ़ैलाने में सक्षम बनाया।

खासकर विभिन्न सीमाओं और संस्कृतियों का समन्वय करने में सक्षम होने के नाते, हमने शैक्षणिक प्रणाली के बारे में भी बहुत कुछ सीखा। हम 'फिनिश' और भारतीय जीवन शैली की तुलना करने में सक्षम थे।

पहले दिन से हम फिनिश संस्कृति और जीवनशैली में डूबे हुए थे। चूंकि हमने अपने मेजबानों के साथ समय बिताया और विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया, हमने महसूस किया कि फिनलैंड से भारत की शिक्षा प्रणाली और जीवनशैली की स्थानीय विधि कितनी अलग है। खेल, नृत्य देखना, रेस्तरां में जाना और जंगलों में घूमना, हमारे मेजबानों ने सुनिश्चित किया कि हम सब एक मजेदार व यादगार समय बिताएँ।

इसके अलावा, स्कूल ने हेलसिंकी में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के कई स्थानों पर भी दौरा किया, जैसे सोमेनिना समुद्री किला, हेलसिंकी चिड़ियाघर और मस्तिकम्मा समुद्र तट। हमारे मेजबानों के साथ पांच दिनों के बाद, हमने अटूट सम्बन्ध बनाए जिन्हें हम हमेशा प्यार करेंगे।

हम एस्टोनिया में स्थित ताल्लिन के नाम से जाने वाले एक शहर में भी गए। जैसे ही हम ताल्लिन के ओल्ड टाउन में कोबब्लस्टोन पथ पर गए, दुनिया के कोने की तलाश में, जो हमारे लिए अपेक्षाकृत अज्ञात था, हमें लगा कि यह सांस्कृतिक रूप से फिनलैंड में हेलसिंकी के समान था।

और इससे पहले कि हम इसे और जानते , अब वापस जाने का समय था। हमारी यात्रा के आखिरी दिन, हमने हवाई अड्डे जाने से पहले पुर्वो नामक एक छोटे से शहर की त्वरित यात्रा की। कुल मिलाकर, यह एक समृद्ध अनुभव रहा और हमने बहुत कुछ सीखा।

हमारी ज़िंदगी उनसे काफ़ी अलग है, पर अंत में हमें कुछ समान चीज़ें मिली और हम एक दूसरे के साथ एक गहरा बंधन बनाने में सक्षम रहे जो हम कभी भूल नहीं पाएँगे।

हरनूर सिंह, सनाह कपूर, अनाहिता जैन (११)

'बीटल्स' के बारे में अज्ञात जानकारी:

१. इस बैंड का पहला नाम "सिल्वर बीटल्स" था।
२. ४ प्रसिद्ध बीटल्स के सदस्यों के अलावा 'पीट बेस्ट' और 'स्टुवर्ट सटक्लिफ' के जैसे और भी संगीतकार थे।
३. बीटल्स का पहला एल्बम, "प्लीज प्लीज मी" UK के "प्रसिद्ध एलबम्स" की चोटी पर तीस हफ्ते तक रहा।
४. बीटल्स का सबसे प्रसिद्ध कॉन्सर्ट शीया स्टेडियम में रहा (सन् १९६५)। पचपन हज़ार लोगों ने इस कॉन्सर्ट का आनंद लिया।

५. आज की तारीख में इन चार संगीतकारों में से सिर्फ दो संगीतकार- पॉल मक्कार्टनी और रिंगो स्टार, ज़िंदा हैं।
६. बीटल्स जैसे लोकप्रिय संगीतकार इस दुनिया में आए ही नहीं। सब उनका संगीत सदियों तक गुनगुनाएँगे।

पृथ्वी ओक (१०)

वर्णानाम् सङ्ग:

पीतः पातलः कौसुम्भः वर्णा:
मनसि पूरयतु उमंगा:।
भवतु जीवनं जीवनस्य सरिणी
कृष्णः सर्वे भवतु सङ्ग:।
श्वेतः मनसि आनयतु शान्तिः

दीपावलि:

प्रतिवर्षम् आगच्छति दीपावलि:
अमावस्यायां प्रतिभाति दीपावलि:।
गणेशः लक्ष्मी च दर्शनं यच्छतः
भक्षणाय मिष्टान्नानि मोदकानि च ददतः।
जनाः नवीनानि वस्त्राणि धारयन्ति
सर्वे जनाः मिलित्वा 'शुभ दीपावलि:' इति कथयन्ति।

दक्ष्याणी चंद्रा (८)

चाँद की सैर

आओ करें हम चाँद की सैर
धरती पर नहीं टिकते पैर |

बचपन से सुनते आए चंदामामा दूर के ,
आज पहुँचकर हम देखेंगे उनको घूर-घूर के |

चंदामामा लगता है बहुत प्यारा,
चलो देखकर हम आएँ वहाँ का नज़ारा |

पहने हम हैलमेट और स्पेस सूट,
मत भूल जाना बूट |

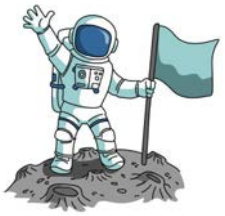

चलो बैठे हम रॉकेट में ,
उड़ चले हम अंतरिक्ष में |

चाँद का ये सफ़र होगा बड़ा सुहाना,
चाँद पर जाऊँ एक दिन, यह सपना था मेरा |

साईशा मिश्रा (६)

वृक्षारोपणम्

अहम् उद्यानम् अगच्छं, वृक्षस्य प्रशंसाम् अकरवम् च ।
वृक्षाः अति महत्वपूर्णं सन्ति, तान् विना जीवनम् असम्भवम् ।
ते मह्यं वायुं, औषधं, भोजनं च यच्छन्ति, खगायै गृहं यच्छन्ति च। ते पर्यावरणं रक्षन्ति, वातावरणाय शोभाः हरिताः च अपि यच्छन्ति । अन्ते, अहम् वदामि, "वृक्षाः सत्पुरुषाः इव" भवन्ति ।

प्रथम पुरस्कृत संस्कृत कथा- विवस्वत रस्तोगी (७)

सम्पादकीय

अर्शिया गौड़, काव्यिनी गरोडिया, तारा जिंग गोपीनाथ,
कात्यायनी झा, अनाहिता कुकरेजा,
रीआना सोनी, पृथ्वी ओक, सना शर्मा, वेदिका बागला,
प्रकृति महाजन,
अनुष्का क्लेस, दारिणी चंदोक, तन्वी बहल, सना कपूर,
हरनूर सिंह, अनाहिता जैन,
आर्यन साधे, राबिया गुप्ता, अदिति सिंह

संपादक - साहिल अरमान कुमार